ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-5* Issue-12* January- 2021
Innovation The Research Concept

म.प्र.के विशेष संदर्भ में घरेलू एवं विदेशी पर्यटकों की रूची में परिवर्तन का विश्लेषणात्मक अध्ययन

Analytical Study of Changes In Interest of Domestic And Foreign Tourists With Special Reference To M.P.

Paper Submission: 15/01/2021, Date of Acceptance: 26/01/2021, Date of Publication: 27/01/2021

भूनेश्वर टेंभरे
प्राध्यापक,
भूगोल विभाग,
रानी दुर्गावती शासकीय
स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
मण्डला, म.प्र., भारत

सारांश

वर्तमान समय में पर्यटन केन्द्रों को इस तरह से विकसित किया जा रहा है कि पर्यटकों को न केवल संपूर्ण आनंद प्राप्त हो सके, अपितु पर्यटक अपने आपको शारीरिक रूप से स्फूर्त, मानसिक रूप से तरूण, सांस्कृतिक रूप से समृद्ध एवं अंतरमन से पर्यटन केन्द्रों को देखने के साथ–साथ महसूस भी कर सकें। परिणामतः वर्तमान समय में पर्यटन मात्र मौज मस्ती का नाम नहीं रह गया है अपितु संस्कृति के आदान–प्रदान के साथ–साथ विदेशी मुद्रा अर्जन का भी सशक्त माध्यम बनकर उभर रहा है। भारत में स्थित जैव विविधता से परिपूर्ण राज्यों में से मध्यप्रदेश एक ऐसा प्रदेश है, जहाँ श्वांसरोधक प्राकृतिक सौंदर्य, सुप्रसिद्व धार्मिक एवं ऐतिहासिक स्थान, विभिन्न संस्कृतियों से परिपूर्ण भूमि एवं राष्ट्रीय मानव मध्य प्रदेश की पहचान है। इन्हीं अद्भुत एवं आष्चर्यजनक सौंदर्य के कारण मध्यप्रदेश में पर्यटन ने एक उद्योग का रूप ले लिया है। इस तथ्य को ध्यान में रखकर देशी एवं विदेशी पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए अतिथि देवो भवः, अतुल्य भारत जैसी योजनाएँ संचालित की जा रही हैं। आज पर्यटन पारिस्थितिकी पर्यटन, चिकित्सा पर्यटन, आध्यात्मिक पर्यटन, सांस्कृतिक पर्यटन, धार्मिक पर्यटन, ग्रामीण पर्यटन एवं ऐतिहासिक पर्यटन के रूप में परिवर्तित हो गया है। प्रस्तुत शोध पत्र एसे ही तथ्यों को विश्लेषित करने का प्रयास है।

At the present time, tourist centers are being developed in such a way that tourists can not only get full enjoyment, but the tourists find themselves physically thriving, mentally youthful, culturally rich and inwardly looking at the tourist centers. To feel along with. As a result, in the present time, tourism is not just a name for fun, but is also emerging as a strong medium for foreign exchange acquisition along with the exchange of culture. Among the biodiversity-rich states in India, Madhya Pradesh is one such region, which has the identity of anti-respiratory natural beauty, well-known religious and historical place, land full of different cultures and national human being. Due to these amazing and amazing beauty, tourism in Madhya Pradesh has taken the form of an industry. Keeping this fact in mind, schemes like Atithi Devo Bhavah, Incredible India are being operated to attract domestic and foreign tourists. Today tourism has transformed into eco-tourism, medical tourism, spiritual tourism, cultural tourism, religious tourism, rural tourism and historical tourism. The presented research paper is an attempt to analyze such facts.

मुख्य शब्द : पारिस्थितिकी पर्यटन, चिकित्सा पर्यटन, आध्यात्मिक पर्यटन, सांस्कृतिक पर्यटन, धार्मिक पर्यटन, ग्रामीण पर्यटन।
Eco Tourism, Medical Tourism, Spiritual Tourism, Cultural Tourism, Religious Tourism, Rural Tourism.

प्रस्तावना

वर्तमान समय में पर्यटन उद्योग न केवल तीव्र गति से विकसित होने वाला उद्योग बन चुका हैं अपितु अर्थव्यवस्था को प्रभावित करने वाले प्रमुख मापदंडों में से एक है। आज पर्यटन मौज–मस्ती का नाम नहीं हैं, अपितु सांस्कृतिक विचारों के आदान–प्रदान से भी जुड़ गया है। पर्यटन आज न केवल धार्मिक पर्यटन, सांस्कृतिक पर्यटन, पर्यावरणीय पर्यटन अपितु चिकित्सा पर्यटन एवं आध्यात्मिक पर्यटन के रूपों में विभाजित होकर शारीरिक मानसिक शांति

प्रदान करने का प्रमुख माध्यम बन चुका है। वर्तमान समय में पर्यटन केन्द्रों पर आने वाले प्रत्येक पर्यटक अपने–आपको शारीरिक रूप से स्फूर्त, मानसिक रूप से तरूण, सांस्कृतिक रूप से समृद्व, आध्यात्मिक रूप से लाभान्वित एवं अर्न्तमन से पर्यटन केन्द्रों के देखने के साथ–साथ महसूस भी करें, यह पर्यटन नीतियों के मूल में शामिल है। इन्ही प्रयासों के कारण न केवल भारत अपितु अध्ययन क्षेत्र भी विश्व के पर्यटन मानचित्र में अपनी महत्ता स्थापित कर चुका है। भारत सरकार की नई पर्यटन नीति (वर्ष 2002) की मंशानुसार पर्यटन केन्द्रों को इस तरह से विकसित किया जा रहा है, कि पर्यटकों को संपूर्ण आनंद के साथ–साथ, आत्मिक शांति एवं शकून भी मिले। इसी दृष्टि से अतुल्य भारत एवं अतिथि देवो भवः योजनाएँ प्रारम्भ की गई हैं। इन समस्त सामूहिक प्रयासों के कारण ही भारत एवं म.प्र. ने पर्यटन के क्षेत्र में लंबी छंलाग लगाई है। प्रस्तुत शोध पत्र इन्हीं तथ्यों के सूक्ष्म विश्लेषण का गंभीरतम प्रयास है।

अध्ययन क्षेत्र

म.प्र. पूर्ण विविधताओं वाला प्रदेश है। भौगोलिक दृष्टिकोण से यह प्रदेश 21^0–6′ से 26^0–30′ उत्तरी अक्षांश एवं 74^0–9′ से 81^0–48′ पूर्वी देशान्तर के मध्य लगभग 308252 वर्ग कि.मी.क्षेत्रफल में स्थित है। इस प्रदेश में ऐतिहासिक एवं कलात्मक रूप से संपन्न क्षेत्र, वैभवशाली राजप्रसाद, पूरातात्वीय स्मारक, सुप्रसिद्व धार्मिक स्थान, श्वासरोधक नैसर्गिक सौन्दर्य एवं अनुपम वन्य जीवन से सरोबार विहंगम सत्य म.प्र. को पर्यटन के स्वर्ग के रूप में स्थापित करते है। म. प्र. में शासन स्तर पर वर्ष 1961 में स्थापित पर्यटन संचालनालय तथा 1978 में स्थापित पर्यटन विकास निगम के सामूहिक प्रयासों ने अध्ययन क्षेत्र को न केवल टाईगर स्टेट, (भारत के सर्वाधिक 5 टाइगर रिजर्व में म. प्र. में स्थित है), हेरिटेज स्टेट अपितु विश्वपटल पर अलौकिक जैव विविधताओं परिपूर्ण प्रदेश के रूप में स्थापित करने में सफलता भी पाई हैं। वर्तमान समय में अध्ययन क्षेत्र में 382 पर्यटन केन्द्र (20 केन्द्र अन्तर्राष्ट्रीय स्तर) अलौकिक एवं दिव्य छँटा से अध्ययन क्षेत्र के पर्यटन को एक नया आयाम दे रहे हैं।

अध्ययन का उद्देश्य

पर्यटन ने आज विष्व के सर्वाधिक गतिशील उद्योग का स्वरूप प्राप्त कर लिया है। यह मनोरंजन के साथ–साथ पर्यावरण संरक्षण, सांस्कृतिक आदान प्रदान एवं विदेशी मुद्रा प्राप्त करने का भी सशक्त माध्यम है। प्रस्तुत शोध पत्र में अध्ययन के उद्देश्य को निम्न रूप में वर्गीकृत किया गया है–

1. पर्यटकों की (विदेशी एवं भारतीय पर्यटक) संख्या में वृद्वि का अध्ययन करना
2. समय के साथ–साथ भारतीय एवं विदेशी पर्यटकों की रूची में हो रहे परिवर्तनों का अध्ययन करना

आंकड़ो के स्रोत एवं अध्ययन प्रविधि

अध्ययन के उद्देष्यों को प्राप्त करने के लिए अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के 19 पर्यटन केन्द्रों को चयन किया गया है। इन पर्यटन केन्द्रों को क्रमशः नैसर्गिक सौदर्य, ऐतिहासिक सौंदर्य एवं धार्मिक सौंदर्य वाले पर्यटन क्षेत्रों में वर्गीकृत कर पर्यटन केन्द्रवार द्वितीयक आंकड़े आयुक्त, पर्यटन विकास निगम भोपाल (म.प्र. शासन) ब्समरो आफ इमिग्रेशन, पर्यटन विभाग भारत सरकार से प्राप्त किये गये है। अध्ययन के उद्देश्यों की स्पष्टता के लिए अध्ययन अवधि वर्ष 2001 एवं 2015 के प्राप्त तथ्यों का सूक्ष्म विश्लेषण करने के लिए सरलतम एवं व्यवहारिक सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग किया गया है।

पर्यटन परिदृश्य – भारत सरकार एवं म. प्र. शासन तथा पर्यटन विकास निगम के सामुहिक गंभीरतम प्रयासों के कारण अध्ययन अवधि के प्रारम्भिक वर्षों में जहां एक ओर 67,56,305 पर्यटकों ने म.प्र. के अलौकिक एवं दिव्य धार्मिक सौन्दर्य, अकल्पनीय ऐतिहासिक सौंदर्य एवं श्वासरोधक प्राकृतिक सौंदर्य का साक्षात्कार किया था, वहीं दुसरी ओर अध्ययन अवधि के अंतिम वर्षों में में 64.63 प्रतिशत की वृद्धि के साथ लगभग 1,91,28,704 पर्यटकों ने उक्त सौंदर्य का साक्षात्कार प्राप्त किया है। पर्यटकों की संख्या में उक्त वृद्धि शासन स्तर पर संचालित योजनाओं एवं किये गये गंभीर प्रयासों के प्रभावों को ही स्पष्ट करती है। उक्त तथ्यों का पर्यटन केन्द्रों की प्रकृति के अनुसार विश्लेषण करने पर स्पष्ट होता है, कि धार्मिक सौंदर्य, ऐतिहासिक सौंदर्य एवं प्राकृतिक सौंदर्य वाले पर्यटन केन्द्रों में क्रमशः 83.56, 51.52 एवं 46.82 प्रतिशत पर्यटकों की संख्या में वृद्धि दर्ज की गई है। उक्त तथ्यों का पर्यटन केन्द्रवार सूक्ष्म विश्लेषण आरेख क्रं. 01, 02 एवं 03 में किया गया है।

नैसर्गिक पर्यटन केन्द्रों में पर्यटक संख्या

आरेख क्रं. 01 में प्रदर्शित तथ्यों के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि अध्ययन अवधि के दौरान नैसर्गिक पर्यटन केन्द्रों में पर्यटकों की संख्या में प्रतिवर्ष लगभग 5. 10 प्रतिशत की दर से 51.18 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। अध्ययन अवधि के दौरान घरेलु एवं विदेशी पर्यटकों की संख्या में वृद्धि का अनुपात क्रमशः 45.40 एवं 61.73 प्रतिशत है। उक्त तथ्यों का पर्यटन केन्द्रवार विष्लेषण करने पर यह स्पष्ट होता है कि लगभग 81.00 एवं 92.77 प्रतिशत की सर्वाधिक वृद्धि बांधवगढ़ पर्यटन केन्द्र में दर्ज की गई हैं। आरेख क्रं. 01 में तथ्यों से यह भी स्पष्ट होता है कि अध्ययन अवधि के दौरान घरेलु पर्यटकों की अपेक्षा विदेशी पर्यटकों की संख्या में तीव्र गति से वृद्धि हुई हैं। पर्यटन केन्द्रवार तथ्यों का सूक्ष्म विश्लेषण आरेख क्रं. 01 में प्रदर्षित किया गया है।

आरेख कं. 01 नैसर्गिक सौंदर्य युक्त पर्यटन केन्द्र में पर्यटक संख्या में वृद्वि

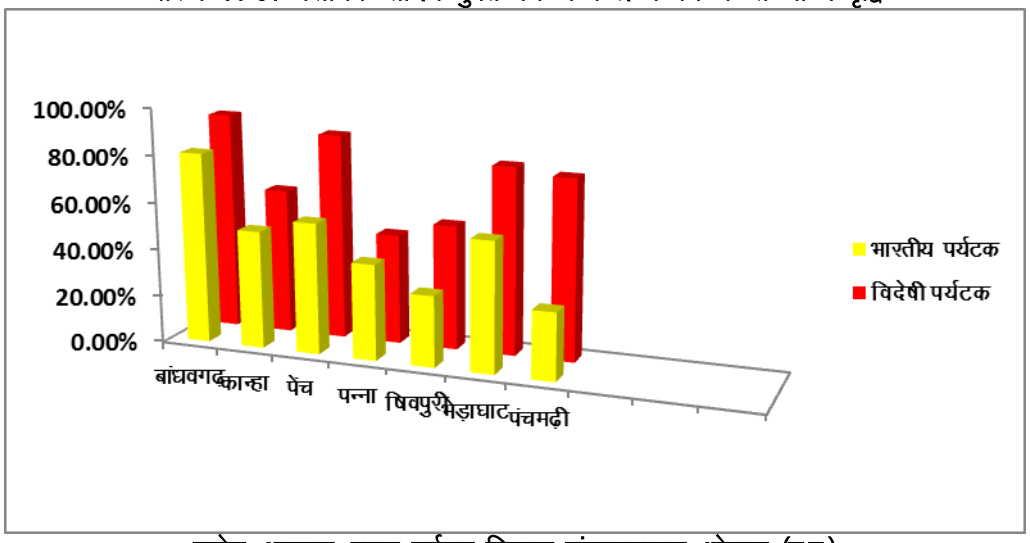

स्त्रोतः आयुक्त, राज्य पर्यटन विकास संचालनालय, भोपाल (म.प्र.)

ऐतिहासिक पर्यटन केन्द्रों में पर्यटक संख्या में परिवर्तन

मध्यप्रदेश ऐतिहासिक राजप्रसादों की दृष्टि से संपन्न प्रदेश है। भारत के स्वाधीनता से पूर्व यह प्रदेश स्थापत्य कला की दृष्टि से भारत के अद्वितीय जनपदों में से एक रहा हैं। ग्वालियर, ओरछा, खजुराहो, सांची, मांडू ,भोजपुर, धार जैसे विष्व प्रसिद्ध ऐतिहासिक केन्द्र पर्यटकों को अपनी ओर सहज ही आकर्षित करते हैं। आरेख कं0 02 उक्त तथ्यों को भली भांति स्पष्ट करते है। अध्ययन अवधि के दौरान इन पर्यटन केन्द्रों में पर्यटक संख्या में लगभग 9.39 प्रतिशत प्रति वर्ष की दर से 93.93 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई है।

आरेख कं. 02 ऐतिहासिक पर्यटन केन्द्रों में पर्यटक संख्या में वृद्वि

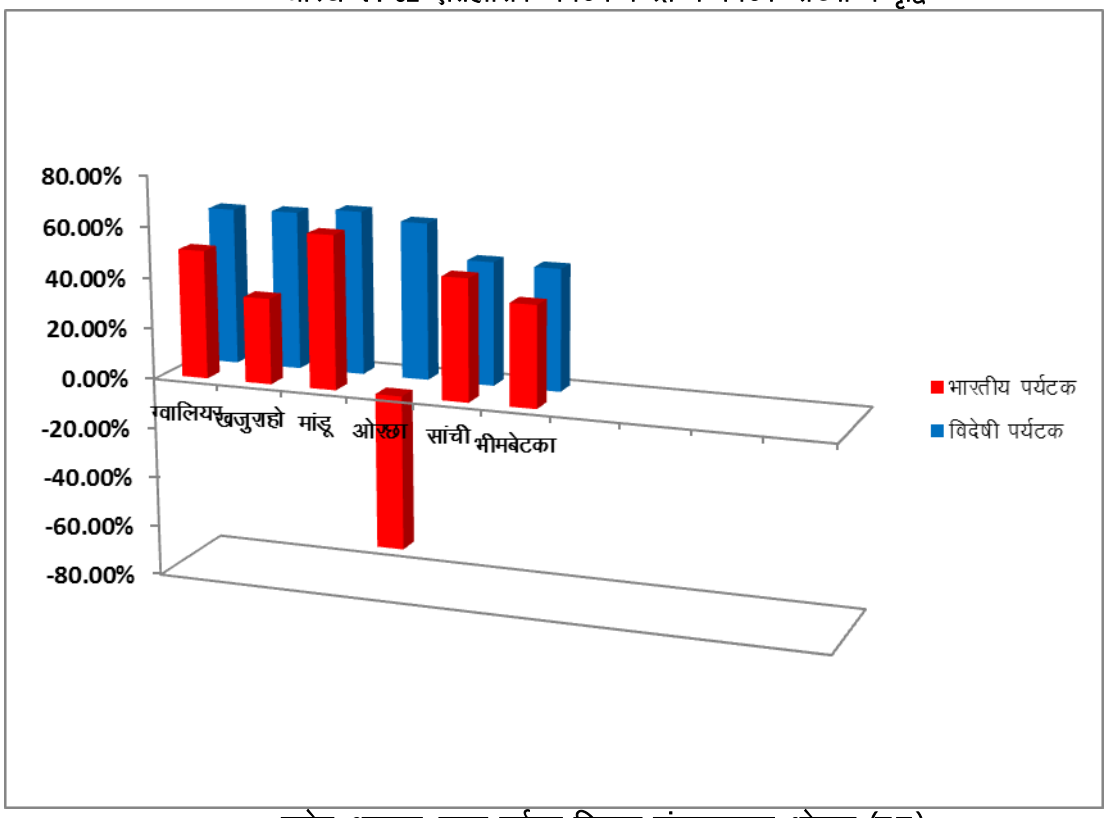

स्त्रोतः आयुक्त, राज्य पर्यटन विकास संचालनालय, भोपाल (म.प्र.),

आरेख क्रं0 02 के तथ्यों से स्पष्ट होता है कि अध्ययन अवधि के दौरान मांडू,ग्वालियर एवं सांची जैसे वैभवशाली राजप्रसाद एवं शांति के प्रतीकों ने पर्यटकों को अधिक आकर्षित किया हैं। विशेषकर विदेशी पर्यटकों की संख्या में भारतीय पर्यटकों की तुलना में अधिक वृद्धि हुई है। घरेलु पर्यटकों की मंनोरजन प्रवृत्ति को उक्त तथ्य भली भांति स्पष्ट करते हैं। वहीं दूसरी ओर आरेख क्रं0 03 के तथ्यों का विश्लेषण करने पर स्पष्ट होता है कि घरेलु पर्यटक धार्मिक पर्यटन केन्द्रो की ओर अधिक आकर्षित होते है। भारतीय जीवन शैली एवं भारत का सांस्कृतिक पर्यावरण घरेलु पर्यटकों को धार्मिक केन्द्रों की ओर सहज ही आकर्षित होते हैं।

आरेख क्रं. 03 धार्मिक पर्यटन केन्द्रों में पर्यटक संख्या में वृद्वि

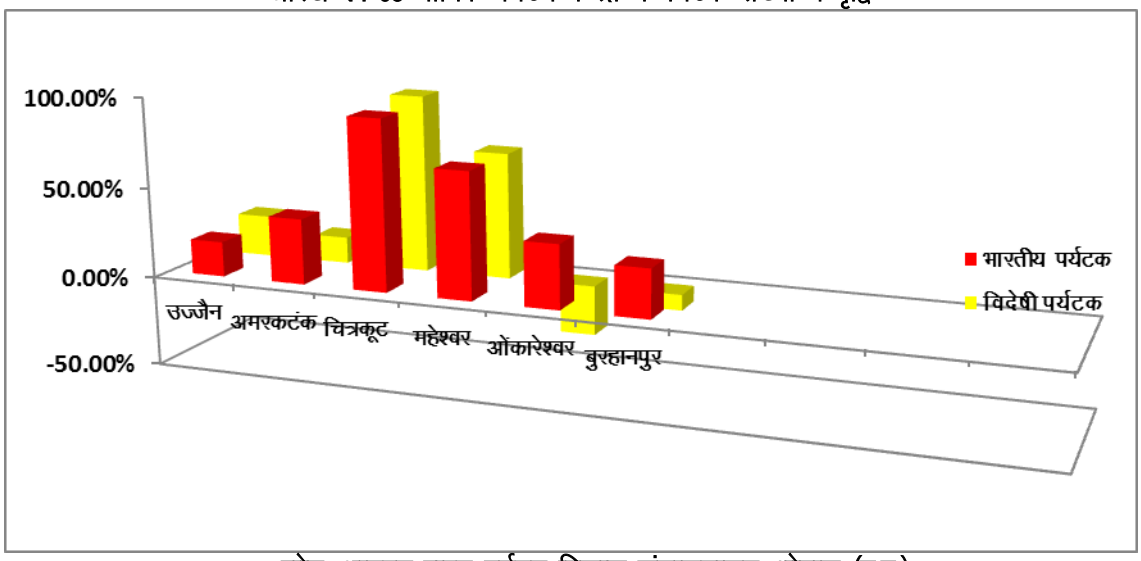

स्रोतः आयुक्त राज्य पर्यटन विकास संचालनालय, भोपाल (म.प्र.)

पर्यटकों की रूची में परिवर्तन का विष्लेषणात्मक अध्ययन

मध्यप्रदेश के पास वह सब कुछ है जो पर्यटकों को (विशेषकर विदेशी पर्यटकों) के लिए कौतुहल एवं आकर्षण का विषय है। वनस्पतियों एवं वन्य जीवों की विविधता, संस्कृति एवं परम्पराओं की समृद्वशाली विविधता, ऐतिहासिक ईमारतें एवं राजप्रसाद तथा उनकी स्थापत्य कला, लोकगायन, लोकचित्रकारी की प्राचीनतम परम्पराओं जैसे अनगिनत क्षेत्र हैं, जो पर्यटको को म.प्र. आने के लिए बाध्य करते हैं। आरेख क्रं0 01,02 एवं 03 के संमक उक्त तथ्यों की पुष्टी भी करते है।

आरेख क्रं. 04, 05 एव 06 में उक्त तथ्यों को अधिक स्पष्टता से प्रदर्शित किया गया है। उक्त आरेखों के अनुसार घरेलु पर्यटकों की संख्या में वृद्वि तो अवष्य हुई है, परंतु कुल पर्यटकों की संख्या में विदेशी पर्यटकों का अनुपात तीव्र गति से बढ़ रहा है। नैसर्गिक सौदर्य, ऐतिहासिक सौदर्य एवं धार्मिक सौंदर्य युक्त पर्यटन केन्द्रो के तथ्यों का सूक्ष्म विश्लेषण करने पर यह स्पष्ट होता है, कि उक्त पर्यटन श्रेणियों में घरेलु पर्यटकों के अनुपातः में जहाँ एक ओर क्रमशः 2.37 एवं 2.12 प्रतिशत की कमी आई है, वह दूसरी ओर विदेशी पर्यटकों के अनुपात में क्रमशः 56.79 एवं 24.31 प्रतिशत की वृद्वि हुई है। पर्यटन केन्द्रवार तथ्यों का सूक्ष्म विश्लेषण आरेख क्रं0 04 ,05, एवं 06 में किया गया है। उक्त विश्लेषण से यह भी स्पष्ट हो रहा है कि अध्ययन अवधि के दौरान घरेलु पर्यटकों का अनुपात पूर्व वर्षो की तुलना में तीव्र गति से कम हो रहा है। उक्त तथ्य भारत सरकार की पर्यटन नीतियों की महत्वाकाक्षीं योजनाएँ अतुल्य भारत एवं अतिथि देवोः भवः के प्रभावों का प्रतिफल है, क्योंकि इन योजनाओं का एक मात्र उद्देश्य विदेशी पर्यटकों की संख्या में वृद्वि करना है।

आरेख क्रं0 04 नैसर्गिक सौन्दर्य युक्त पर्यटन केन्द्रों में आनुपातिक परिवर्तन

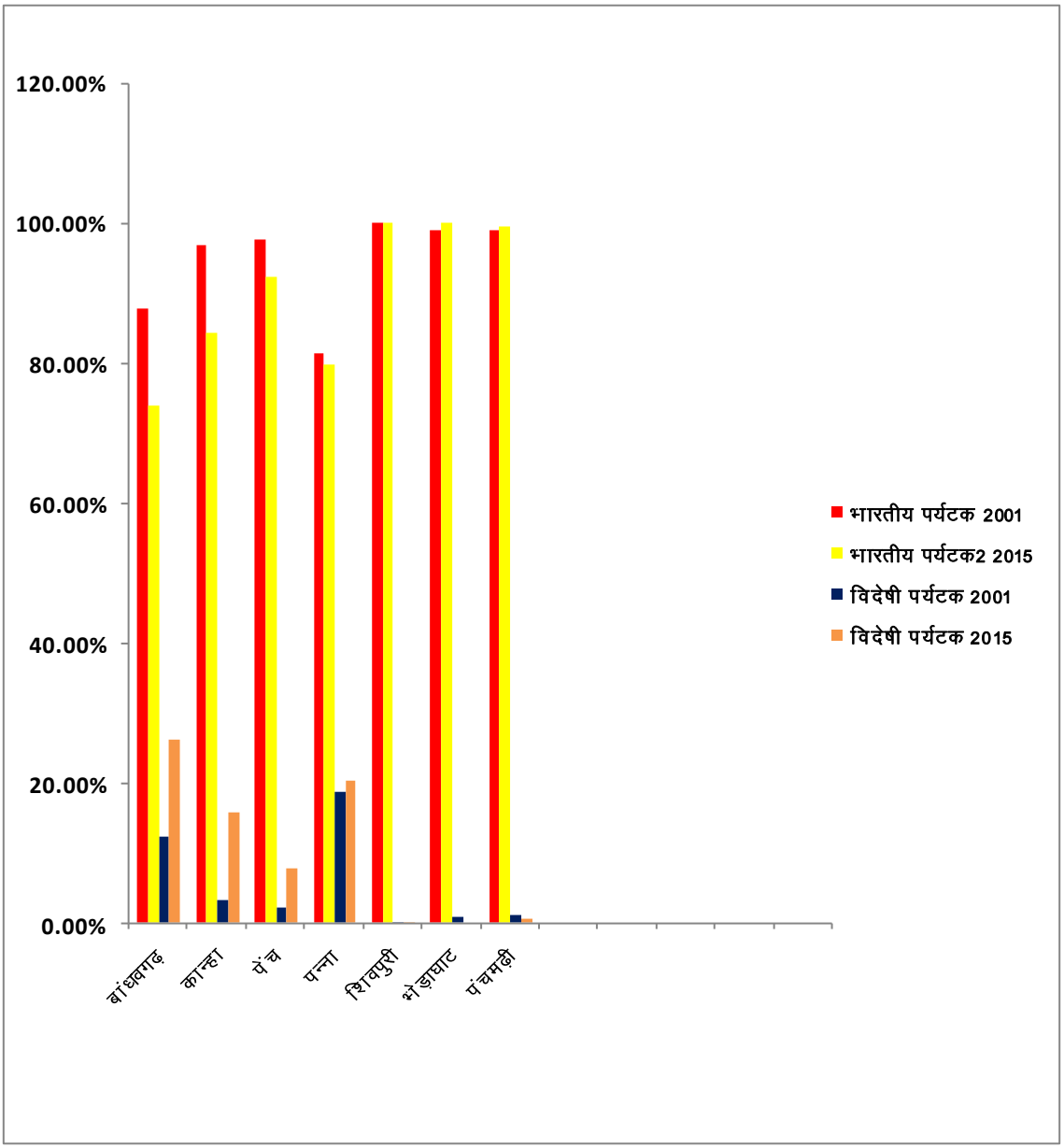

स्त्रोतः आयुक्त, राज्य पर्यटन विकास निगम, भोपाल (म.प्र.)

आरेख कं0 05 ऐतिहासिक सौन्दर्य युक्त पर्यटन केन्द्रों में पर्यटक संख्या में आनुपातिक परिवर्तन

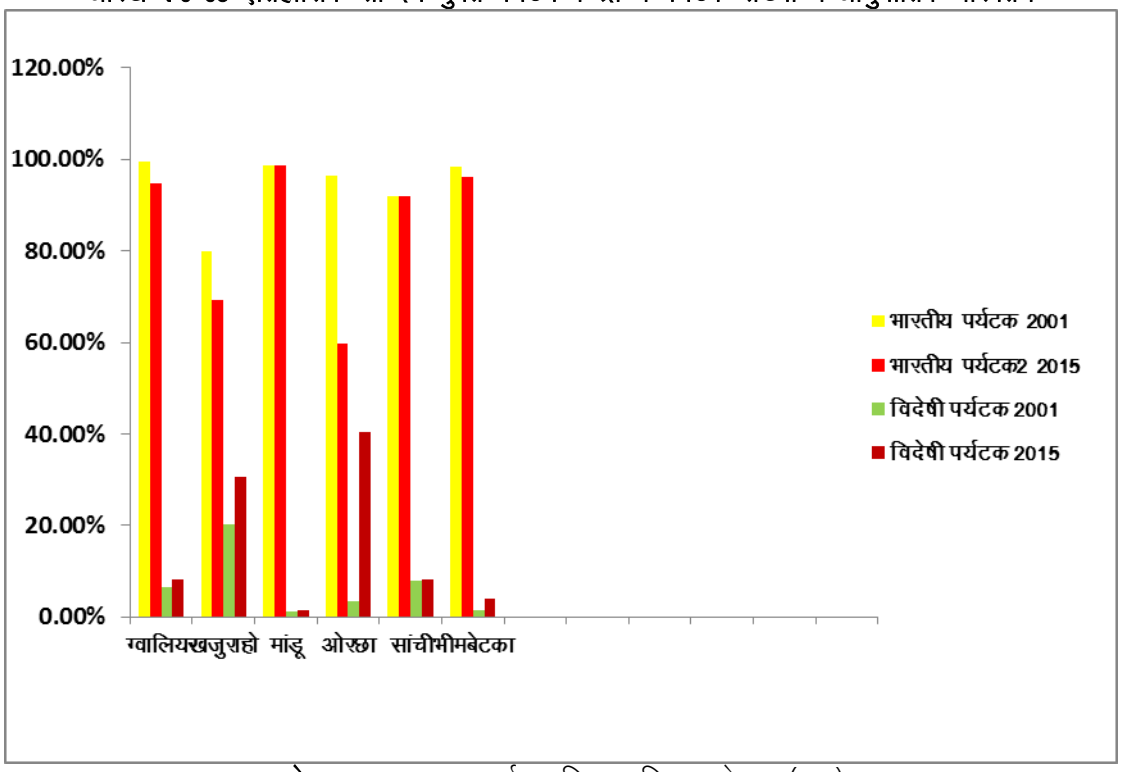

स्रोतः आयुक्त, राज्य पर्यटन विकास निगम, भोपाल (म.प्र.)

आरेख कं0 06 धार्मिक पर्यटन केन्द्रों में पर्यटक संख्या में आनुपातिक परिवर्तन

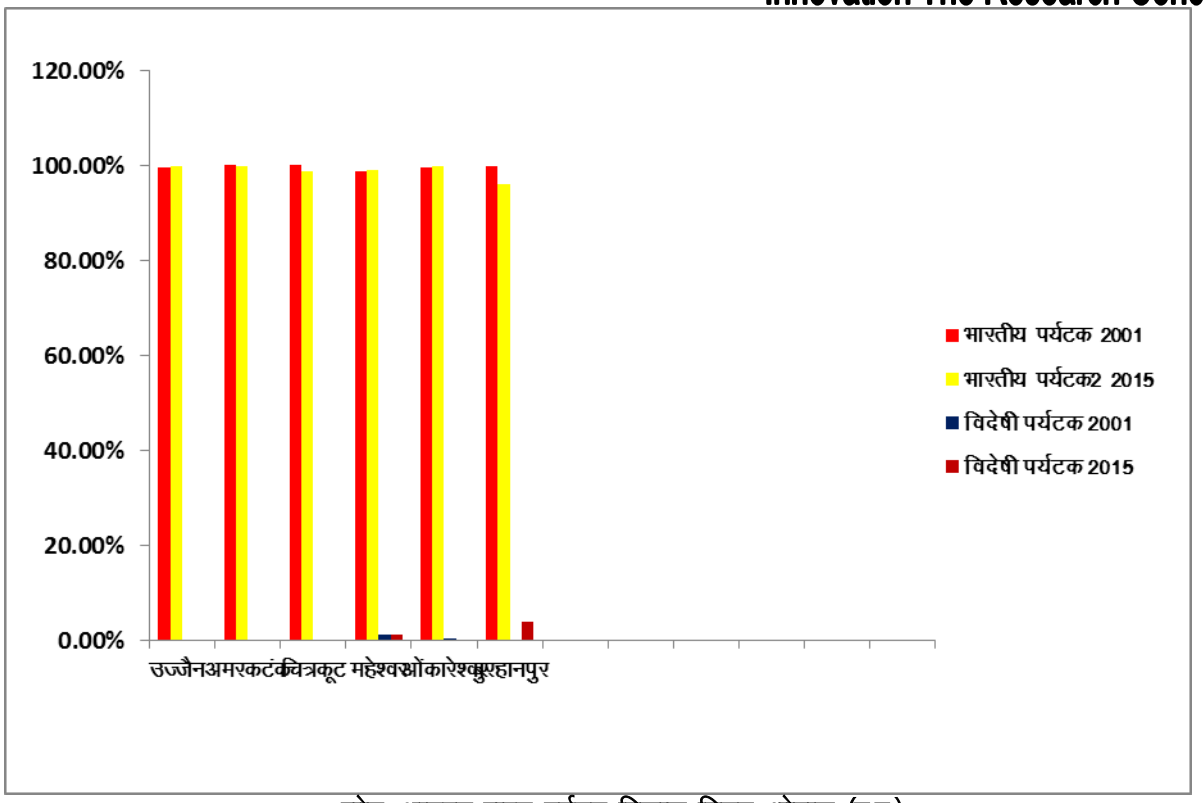

स्रोतः आयुक्त राज्य पर्यटन विकास निगम, भोपाल (म.प्र.)

मूल्याँकन

भारत सरकार की राष्ट्रीय पर्यटन नीति एवं मध्यप्रदेश शासन की पर्यटन नीतियों का एक मात्र उद्देश्य पर्यटकों की संख्या में वृद्वि कर राजस्व प्राप्ती के साथ–साथ विष्व समुदाय से सांस्कृतिक संबंधों में प्रगाढता स्थापित करना भी है। ऊपर वर्णित विश्लेषण उक्त तथ्यों की पुष्टी भी करते है। पर्यटन मंत्रालय एवं पर्यटन निगम के द्वारा संचालित विभिन्न योजनाओं के कारण जहाँ एक ओर पर्यटकों की संख्या में तीव्र गति से वृद्वि हुई हैं, वहीं दूसरी ओर ऐसे तथ्य भी उभर रहे है, जो निःसंदेह भविष्य के लिए चिंता का विषय हो सकते है, ये तथ्य निम्नलिखित है–धार्मिक पर्यटन केन्द्रों पर विदेशी पर्यटको की संख्या में निरन्तर कमी आ रही है। स्थापत्य कला वाले पर्यटन केन्द्रों में घरेलु पर्यटकों की संख्या में कमी आ रही है एवं विदेशी पर्यटकों की संख्या में निरन्तरता का अभाव प्रदर्शित हो रहा है। उक्त समस्याओं को सभी पर्यटन केन्द्रों को आपस में जोडकर, आधारभूत सुविधाओं का विकास कर एवं मुख्य पर्यटन केन्द्रों के साथ कम महत्व के पर्यटन केन्द्रों को पैकेज के रूप में जोड़कर घरेलु एवं विदेशी पर्यटकों की संख्या में वृद्वि की जा सकती हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *Archer, B.H. 1989. Tourism and Island Economies: Impact Analyses, in C.P. Cooper (ed.), Progress in Tourism, Recreation and Hospitality Management Chapter 8: 125-34 London and New York: Belhaven Press.*
2. *Barnes, Joe.(2003) Globalization,the State and Geopolitics. The James A. Baker III Institute forPublic Policy-Rice University,7.*
3. *Ganesh, Auroubindo and Dr. Madhavi, C., Impact of Tourism On Indian Economy - A Snapshot, Journal of Contemporary Research in Management, Volume-1, No.1, 2 Jan - June 2007 pp235-240,*
4. *Jafari, J. 1974: The socio-economic cost of tourism to, developing countries, Annals of tourism research - 227-259.*
5. *Sharma Kshitiz, 2014. Introduction to Tourism Management, McGraw Hill Education(India) Private Limited, New Delhi*
6. *Smith, S.L.J.1997. TSAs and the WTTC/WEFA Methodology: Different Satellites or Different Planets? Tourism Economics 3(3): 249-263.*
7. *Theuns H.L. 1976: Notes on the economics of international tourism in developing countries, Annals of tourism research, vol 3 I, pp - 2-10.*
8. *http://www.incredibleindia.org/*
9. *.http://en.wikipedia.org/wiki/Tourism*